मगध और मिथिला क्षेत्र के चौहट गीतों की भाव-व्यंजना चौसामा के चौहट

अदिति वर्मा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, पी० एम० एस० कॉलेज,पहड़पुरा, बिहार शरीफ,नालन्दा।

सार

बिहार में चौमासा प्रारंभ होते ही चौहट का खेल (नाट्य) शुरू हो जाता है। चौहट ग्रामीण बालाओं की सर्वाधिक लोकप्रिय नाट्य अभिव्यक्ति है। ये पूर्णत: नारी समाज का मनोरंजन है। इस नाट्यगीत में स्त्रियाँ ही नृत्य, गीत और अभिनय करती हैं। दर्शक भी स्त्रियाँ ही होती हैं। पुरुष का प्रवेश पूर्णत: वर्जित होता है। अत: इसमें दाम्पत्य-जीवन का मार्मिक पक्ष उभरता है। इसमें रंगमंच खुले आकाश के नीचे होता है। इनमें पर्दा का व्यवहार नहीं होता, न रंगमंचीय सजावट होती है। प्रकृति प्रदत्त सुविधाएँ ही इनके लिए पर्याप्त होती हैं। चौहट खेल के लिए सामन्यत: किसी विशेष प्रकार के प्रसाधनों की आवश्यकता नहीं पड़ती। महिलाएँ प्राय: पुरुष पात्रों के अभिनय में अपनी साड़ी को ही आवश्यकतानुसार धोती या अन्य रूपों में व्यवहृत करती हैं। प्रसाधन हेतु विभिन्न प्रकार के वृक्षों की पत्तियाँ, डालियाँ, लताएँ और पुष्पों का प्रयोग करती हैं। नाट्य के कथानक के अनुरूप टोकरी, मटका, तराजू, कुदाल, खुरपी, नाव इत्यादि सामग्री का प्रयोग किया जाता है। नाट्य में हृदय परिवर्त्तन के लिए पर्दा की आवश्यकता नहीं होती। कथावस्तु अत्यन्त लघु होती है।

इस नाट्य प्रस्तुति गीत में महिलाएँ दो दलों में विभक्त होती हैं। प्रत्येक दल में चार महिलाएँ करबद्ध होती हैं। दोनों दल एक- दूसरे के समक्ष विशेष मुद्रा में खड़े होकर साभिनय गीतों के द्वारा उत्तर- प्रत्युत्तर देते हैं। दोनों दल परस्पर विपरीत दिशा में चार कदम आगे बढ़कर एक- दूसरे के सिर-से- सिर स्पर्श कर विपरीत दिशा में चार कदम पीछे हट जाते हैं। चार-चार स्त्रियों का दल चार कदम आगे और चार कदम पीछे हटकर झूम-झूमकर इस नाट्यगीत को प्रस्तुत करती हैं। इसीलिए इस नाट्यगीत को ग्रामीण क्षेत्रों में चौहट कहा जाता है। डॉ0 सम्पत्ति आर्याणी नें अपनी पुस्तक ''मगही भाषा और साहित्य'' में इन नाट्यगीतों पर विचार करते हुए लिखा है: .....''गीत और नाट्य का सम्बन्ध अति प्राचीन काल से चला आ रहा है। नाटक की उत्पत्ति सभ्यता के विकास के पूर्व इन्हीं से हुई थी। मगही में ऐसे गीत हैं, जो गेय होने के साथ ही नाट्य हैं। यथा- बगुली, जट्ट-जट्टिन, सामा- चवा नाम के गीत।'' (1) इसी आधार पर इन्होंने चौहट गीतों को 'नाट्यगीत' कहा है। लेकिन, ये गीत नाट्य में संवाद के रूप में प्रयुक्त हैं। कहीं- कहीं ये गीत नाट्य के उपोद्घात हैं। अत: ये नाट्यगीत न होकर गीति तत्व प्रधान लोकनाट्य ही हैं।

चौहट का खेल (नाट्य) प्रारंभ होने से पूर्व काफी देर तक सामूहिक गीत एवं नृत्य का क्रम चलता है। महिलाएँ देर रात तक समवेत स्वर में गीत प्रस्तुत करती हैं। इसे झूमर भी कहते हैं। यह झूमर गीत नाट्याभिनय की प्रस्तावना के रूप में आयोजित होता है। ये गीत नाट्य प्रदर्शन की पृष्ठभूमि के निर्माण में सहायक हैं। समवेत गान दर्शकों को एकत्र करने का आमंत्रण और प्रदर्शन के प्रारंभ की घोषणा होती है। ये

गीत नाट्य प्रदर्शन के लिए उद्दीपन होता है। नाट्यगीत को एक प्रसंग से दूसरे की ओर मुड़ने का अवसर प्रदान करता है। चौहट नाट्य के प्रस्तावना गीत में चाँदनी रात की उज्ज्वल छटा का मनमोहक वर्णन है:-

झूमर का खेल पति संसर्ग से भी अधिक रागात्मक है। एक नव विवाहित पति से आग्रह करती है-

राम जी तनी एक जाएदऽ झूमर खेले नऽ।
जब तू हीं जएब झूमर खेले नऽ
सीता हमरो के जलवा लगा के जइह नऽ
राम जी जलवा लगइते बड़ा देर होइहे नऽ
राज जी दुअरे पर सब सखी खाड़ होइहे नऽ[4]

लोकजीवन में राम और सीता पति -पत्नी के शाश्वत प्रतीक हैं। ये गीत झूमर खेलों की नैसर्गिक वातावरण का निर्माण करता है।

प्रस्तावना का दूसरा अंश है, नृत्य-सहित वे संवाद गीत जिनमें स्त्रियों के दो दल खेल के लिए एक दूसरे को आमंन्त्रित करते है: यथा-

प्रथम दल- चल हे सिरमान बेटी हो-हो रे, झूमर खेले ना।
द्वितीय दल- कथि रे पात चढ़ि हो-हो रे, झूमर खेलवा ना।
प्रथम दल- पुरैनी रे पात चढ़ि हो-हो रे, झूमर खेलवा ना।
द्वितीय दल-वोहि पुरैनी चूरि चारि हो-हो रे, वोहे झीकी मारवौ ना [5]

इस प्रस्तावना संवाद से यह स्पष्ट होता है कि झूमर खेल में तथाकथित उच्च वर्ग की कन्याएँ भी भाग लिया करती हैं।

प्रस्तावना गीत में विनोद और परिहास को जाग्रत करनेवाला सहगान का भी समायोजन होता है ---

कजरी खेले, गेलिए हे तूत के गली,
झूमका हेरैलिय अमरूद के गली।
सासु कहे मार-मार, ननद करे चुगली,
सैयाँ जालिम जोर करै मारै अँगुली।
कजरी खेले गेलिए हे तूत के गली।[6]

एक अन्य प्रस्तावना गीत में नायिका चिन्तित है कि झूमर के खेल में माँग का टीका खो गया। अब वह अपने पिता, भाई यदि को क्या उत्तर देगी। देखें---

सावना भदोइया के टह-टह इंजोरिया
से खेलन गेली न, महरवा दुकनिया
से खेलत -खेलत बीतल मिसी रतिया
से हेराई गैले न, उजै माँग केरे टिकवा हेराई गैले न
कादो - कीच रहैते बाबा हिटी-हाटी खोजती,
बे थाहे पनिया ना, बाबा खोजलो न जाहई,
बे थाहे पनिया ना।[7]
चँदवा जे उगलै झलामली रे दैया।
उगि काहे, छपितु काहे भेलै हे, उगि काहे।
ससुरा जे अइलै लियाबन रे दैया।
गौरे- दुआरे मिठइया लेके ठाढ़ हे, गोर -दुआरे।
चलहु-से-चलहु पुतहु आपन देसबा हे।
तोरे बिनु भनसबा भेलैं सुन हे, तोरे बिनु।
जाहु-जी-जाहु सासुर आपन देसवा हे।
हम नाहीं जइबे ससुररिया हे, हम नाहीं।
सखी संग खेलवै झूमरिया हे, कदम तरे।[2]

चौहट खेल का आयोजन सावन-भादो के शुक्ल पक्ष की रात्रि में होता है। चन्द्रमा का उज्ज्वल सौन्दर्य रंगशाला की सम्मोहक पृष्ठभूमि और नाट्यरस का चंचल उद्दीपन है। चौहट गीतों में गार्हस्थ जीवन के विविध व्यापारों का वर्णन किया जाता है। बेटी का नैहर में रहने का हठ, ससुर या भैंसुर का लियाबन के लिए आगमन ग्रामीण युवतियों के

जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है। एक वधू का मायके में रहने का आग्रह-भाव पर आधारित एक गीत है--

अहो रामा सावन मासे रोपली करइलिया
अहो रामा भादो मासे पसरल डलिया
अहो रामा जब हम औंठा से डलिया नेबैली
अहो रामा आइगैले ससुर जी लियाबन
अहो रामा अब की नियरवा बाबा जानु फेरहु
अहो रामा खेले देहु भादो के झक-झूमर। **3**

प्रस्तावना गीतों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है, उनकी भावात्मकता।श्रृंगार रस के संयोग पक्ष में यह उल्लास आनन्द आदि के रूप में अभिव्यक्त होता है, पर वियोग पक्ष में प्रिय मिलन की कामना, विरहजनित वेदना, व्याकुलता आदि को विवृत्ति के रूप में। इनके अतिरिक्त नव वधू की लालसा, देवर-भाभी का हास -परिहास, सरहज - ननदोसी का पारम्परिक स्नेह-व्यवहार एवं गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियों की भी अच्छी व्यंजना इन गीतों में मिलती है। यथा--- एक गीत में श्रृंगार रस के संयोग पक्ष का अद्‌भूत आनन्दमय चित्रण है -

बाबा फुलबड़िया मेंहदी के गछिया।
मेंहदी तोड़े गेली बाबा फुलबड़िया आ गेल माली रखवार
रगड़ी - रगड़ी मेंहदी पिसव हे, उसमें ढेढ़ावा - पात।
कौन लगाबै कानी अंगुरिया हे, कौन लगावे भरी हाथ।
पियवा लगाबे कानी अंगुरिया हे हम लागाबी भरी हाथ।
मेंहदी लगा के सुतली कोठरिया हे, चोलिया रंग से बैरंग[8]।

ये गीत रस के सागर हैं। इनमें भाव-व्यंजन के सौन्दर्य के साथ - भाषा की सरसता भी वर्त्तमान रहती है। ये गीत छोटे-छोटे होते हैं। इनमें छोटे-छोटे कथानकों का भी समावेश होता है। अनेक गीतों में परिवार के सदस्यों का परिचयात्मक विवरण होता है,यथा-

केहो रोपे साही धनवा हे केहो रोपे कपास।
केहो रोपे नौरंगिया हे, नौरंग खिले अकाश।
बाबा रोपे साही धनवा भइया रोपे कपास।
मेरो प्रभु रोपे नौरंगिया हे नौरंग खिले अकाश।
केहो काटे साही धनवा केहो काटे कपास।
केहो काटे नौरंगिया हे, नौरंग खिले अकाश।
बाबा काटे साही धनवा भइया काटे कपास।
मेरो प्रभु काटे नौरंगिया हे, नौरंग खिले अकाश।[9]

एक अन्य गीत में ससुर एवं भैसुर के प्रति सामान्य तथा पति के प्रति विशेष प्रेम व्यंजना हुई है-

नोहवा से कोरी-कोरी मट्टिया मँगवली से,
चुल्हवा बनायली अजगुत रे, दुई रंगिया।
एक कर रचव दलिया से भतवा।
दोसर कर रचव दुध रे, दुई रिंगया
किनखा के खिलायव दलिया से भतवा।
किनखा के खिलायव दूध रे, दुई रंगिया।
ससुरा भैंसुरवा के दलिया से भतवा।
मेरा प्रभु पियतन दूध रे, दुई रंगिया। 10

इन प्रस्तावना गीतों की गति, लय और प्रवाह से ही पता चलता है कि ये नृत्यगीत है। इस तरह के सहगान एवं नृत्य सहित संवाद-गीतों की कर्मगत उपयोगिता है---

1. उत्सव के उल्लास के लिए उद्दीपन जुटाया जाता है।
2. दाम्पत्य और कौटुम्बिक जीवन के प्रमुख पात्रों का परिचय होता है।
3. उत्सव में भाग लेने के लिए सहेलियों को आमन्त्रण दिया जाता है।

प्रस्तावना के इन अंश में आगे प्रस्तुत किये जानेवाले नाट्य प्रदर्शन की भूमिका बंध जाती है। इन्हें

हम एक तरह का भावोद्दीपन मान सकते हैं।

चौमास के समय जिन नाट्यगीतों का प्रदर्शन सर्वाधिक लोकप्रिय है, वे निम्नलिखित है:-

1. बगुली	2. जट्ट-जट्टिन
3. सीतामिता	4. गोरस
5. केवटी	6. कुँजड़िन
7. चुड़ीहारिन	8. चानो
9. गेड्डरी	10. जीरावुन
11. दिहुली	12. धोबी- धोबिन
13. नेटुबा - कमसिन	14. बिखझरी
15. रूआ-धुन	16. सास-पतौहू
17. हरदा-छु	11

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. डॉ0 सम्पति आर्याणी- मगही भाषा और साहित्य, पृष्ठ- 390।
2. गीता कुमारी, पिता- स्वर्गीय जगेश्वर महतो, ग्राम- सीढ़, पो0- टौऊसा, प्रखण्ड- खिजरसराय, जिला- गया (बिहार)।
3. मंजु कुमारी, पिता- स्वर्गीय जगेश्वर महतो, ग्राम- सीढ़, पो0- टौऊसा, प्रखण्ड- खिजरसराय, जिला- गया (बिहार)।
4. नगिना देवी, पिता- श्री बद्री नारायण प्रसाद, ग्राम-बरदाहा, पो0- खोदागंज, प्रखण्ड- इस्लामपुर, जिला- नालन्दा।
5. नगिना देवी, पिता- श्री बद्री नारायण प्रसाद, ग्राम- बरदाहा, पो0-खोदागंज,प्रखण्ड-इस्लामपुर, जिला- नालन्दा।
6. नगिना देवी, पिता- श्री बद्री नारायण प्रसाद, ग्राम- बरदाहा, पो0-खोदागंज, प्रखण्ड-इस्लामपुर जिला- नालन्दा।
7. सरला देवी, पिता- श्री राजेन्द्र प्रसाद, ग्राम- बिच्छा, प्रखण्ड- बजीरगंज,जिला- गया (बिहार)।
8. सरला देवी, पिता- श्री राजेन्द्र प्रसाद, ग्राम- बिच्छा, प्रखण्ड- बजीरगंज,जिला- गया (बिहार)।
9. श्रीमती कमला देवी, पति- श्री अखिलेश्वर प्रसाद, ग्राम- बारा, जिला-गया।
10. श्रीमती कमला देवी, पति- श्री अखिलेश्वर प्रसाद, ग्राम- बारा, जिला-गया।
11. श्रीमती सावित्री देवी, पिता- स्वर्गीय छत्रधारी महतो, ग्राम- बारा, पो0- खँजाहापुर, जिला- गया (बिहार)।